Name & Address | Office | Residence | Fax/Telex

माना कि इस जमीं को न गुलज़ार कर सके
कुछ ख़ार कम तो कर चले गुज़रे जिधर से हम।

कुछ ऐसी है हालत अपनी
कहते न बनी, ना सह पाये
पलकों में रुके आँसू आकर
न लौट सके, ना बह पाये।

हम कह के न कह पाये
वह सुन के नहीं समझे
कुछ राज़ हैं इस दिल के
जो साथ ही जायेंगे।

जहाँ रहेगा वहीं रोशनी लुटायेगा
किसी चिराग का अपना मकां नहीं होता।

हर आदमी में होते हैं दस-बीस आदमी
जिसको भी देखना हो कई बार देखना।

भूल जाएँ तो मज़ा क्या, साथ चलने का रहे
हर सफ़र के साथ कोई हादसा रहना गया।

किसकी ज़ुर्रत है जो कर सके
हमारी परवाज़ में कोताही
हम परों से नहीं
हौसलों से उड़ते हैं।